P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-6* ISSUE-4* July- 2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

गाँधीजी की *ईश्वर* के प्रति अवधारणा की प्रासंगिकता

Relevance of Gandhiji's Concept of the *Ishwar*

Paper Submission: 05/07/2021, Date of Acceptance: 14/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

प्रेयस सोनी
छात्र,
इतिहास विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली,
भारत

सारांश

ईश्वर एक ऐसी अवधारणा है, जिसके प्रभाव से कोई व्यक्ति बच नहीं सकता। ऐसे व्यक्ति, जो यह दावा करते हैं कि वे ईश्वर में आस्था नहीं रखते, वे भी ईश्वर की अवधारणा से विलग नहीं हैं, क्योंकि उनकी आस्था ईश्वर को न मानने में है। विश्व–जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग ईश्वर में आस्था रखता है। अधिकतर लोग संकट में ईश्वर का स्मरण करते हैं। यह अलग बात है कि वे जिस ईश्वर का स्मरण करते हैं, वह स्थूल रूप में उनकी पूजा–पद्धति से जुड़ा है। उन्हें ईश्वर के एक व निराकार रूप की समझ नहीं है। उन्हें यह व्यावहारिक ज्ञान नहीं है कि सत्य ही ईश्वर है। वे नहीं जानते कि दैनिक जीवन में जीव मात्र से प्रेम करना ही ईश्वर की आराधना है। उन्हें यह नहीं पता कि जीवन में अहिंसा के पथ पर चलने से ही सत्य व प्रेम की सिद्धि होती है और हम ईश्वर का नैकट्य प्राप्त करते हैं। ये बातें हमें महापुरुष सिखाते हैं। महात्मा गाँधी एक ऐसे ही महापुरुष हुए हैं – जिन्होंने संसार को सत्य, प्रेम व अहिंसा के त्रिआयामी स्वरूप से परिचित करवाया। आज, जब विश्व कोरोना जैसी महामारी के संकट से जूझ रहा है – हमें सत्य, अहिंसा व प्रेम जैसे प्रत्ययों के माध्यम से *ईश्वर* के स्थूल रूप को नहीं, बल्कि उसके सूक्ष्म रूप को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि महामारी के कारण हमारा आत्मविश्वास डगमगा रहा है। यही कारण है कि आज भारत की सनातन चेतना के वाहक महात्मा गाँधी का स्मरण करने व ईश्वर के सम्बन्ध में उनकी अवधारणा का युक्तियुक्त परीक्षण करने की आवश्यकता है।

Ishwar is such a concept, from whose influence no one can escape. Such persons, who claim that they do not believe in God, are also not detached from the concept of the Ishwar, because their belief lies in not believing in the Ishwar. A large part of the world population believes in the Ishwar. Most people remember the Ishwar in distress. It is a different matter that the Ishwar whom they remember is related to their worship method in a gross form. They do not understand the one and formless form of the Ishwar. They have no practical knowledge that truth is the Ishwar. They do not know that in daily life simply loving the living entity is the worship of the Ishwar. They do not know that only by following the path of non-violence in life, truth and love are attained and we get the bounty of the Ishwar. These things are taught by great men. Mahatma Gandhi has been one such great man - who introduced the world to the three-dimensional form of truth, love and non-violence. Today, when the world is battling with the crisis of pandamic like Corona - we need to understand the Ishwar not the gross form but his subtle form through the concepts like truth, non-violence and love, because our confidence is shaken due to the pandemic. This is the reason why today there is a need to remember Mahatma Gandhi, the carrier of India's eternal consciousness and to test his concept about the Ishwar with a reasonable test.

मुख्य शब्द : ईश्वर, सत्य, प्रेम, अहिंसा, धर्म–प्राण, कोरोना, प्रत्यय, सद्गुण, आस्था, विश्वास, ईश्वरवादी, आस्तिकता, नास्तिकता, सत्याग्रह, साध्य, साधन, उपवास।

Ishwar, Truth, Love, Non-violence, Dharma-Pran, Corona, Pratyaya, Virtue, Faith, Belief, Theistic, Theism, Atheism, Satyagraha, End, Means, Fasting.

प्रस्तावना

मनुष्य स्वभाव से धार्मिक होता है। अन्य मनुष्यों की तरह महापुरुष भी धर्म से ही प्रेरणा लेते हैं, किन्तु उनके धर्म का स्वरूप सैद्धान्तिक नहीं,

व्यावहारिक होता है। भारत के स्वतंत्रता–संग्राम में सक्रिय रहे महात्मा गाँधी भी एक धार्मिक व्यक्तित्व थे। उनके जीवन से अब तक कोटि–कोटि जन प्रेरणा ले चुके हैं। आज, जबकि विश्व कोरोना नामक महामारी की चुनौती झेल रहा है और लोगों का धर्म और ईश्वर के प्रति विश्वास डगमगा रहा है, सभी का ध्यान भारत की ओर है। भारत एक ऐसा देश है, जिसने हर संकट में दुनिया को राह दिखाई है। आज भारत, अन्य महापुरुषों के साथ–साथ, महात्मा गाँधी की ईश्वर के प्रति अवधारणा के माध्यम से दुनिया का खोया हुआ आत्मविश्वास लौटा सकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि महात्मा गाँधी की ईश्वर के प्रति अवधारणा को सरल तरीके से दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।

अध्ययन का उद्देश्य

हमारे निकट अतीत में महात्मा गाँधी ही ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिनकी बातों को लोगों ने विश्वासपूर्वक समझने का प्रयास किया है। इस शोध–आलेख को लिखने का उद्देश्य कोरोनाकाल में लोगों के डगमगा रहे आत्मविश्वास को, गाँधीजी की ईश्वर–सम्बन्धी अवधारणा के आधार पर, पुनस्थापित करना है।

परिकल्पना

1. ईश्वर को स्थूल रूप से समझने से आगे की प्रक्रिया उसे सूक्ष्म रूप से समझना होती है और ईश्वर को सूक्ष्म रूप से समझने के लिए दर्शन–विज्ञान के सैद्धांतिक आधार की नहीं, अपितु आचरण–विज्ञान के व्यावहारिक आधार की आवश्यकता होती है।
2. लोगों के लिए आचरण–विज्ञान का व्यावहारिक आधार के सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहे महापुरुषों के जीवन से सीखना अपेक्षाकृत सरल होता है।

साहित्यावलोकन

गाँधीजी को समझने का श्रेष्ठ माध्यम उनका जीवन ही है। गाँधीजी ने अपने विषय में यही कहा था कि मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है, फिर भी विभिन्न विषयों पर उनके दृष्टिकोण को समझने के लिए हमें उनके लेखन का अवगाहन करना चाहिए – जो विभिन्न स्रोतों के माध्यम से सरलतापूर्व उपलब्ध हो जाता है। उनके लेखन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है उनकी दो पुस्तकें – 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' व 'हिन्द स्वराज'। इसके अतिरिक्त वे सर्वाधिक अभिव्यक्त हुए हैं अपने से जुड़े दो प्रमुख अखबारों में, जो हैं – 'यंग इण्डिया' व 'हरिजन'।

गाँधीजी के कार्य व दर्शन पर अनुसंधान आज भी जारी है। जनवरी 2021 में जे. के. बजाज व एम. डी. श्रीनिवास की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है– 'मेकिंग ऑफ ए हिंदू पेट्रिऑट य बैकग्राउण्ड ऑफ गाँधीजीज हिन्द स्वराज'। इस पुस्तक में चर्चा की गई है कि गाँधीजी जिसे धर्म कहते थे, वह रिलीजन नहीं है– बल्कि उससे बढ़कर वह उदात्त विश्व–कल्याण की भावना का प्रतिनिधित्व करने वाला सार्वभौमिक धर्म है। 2020 में सुशोभित शक्तावत की एक पुस्तक 'गाँधी की सुन्दरता' प्रकाश में आई थी, जिसमें उनके ईश्वर से सम्बन्धित विचारों को सहज रूप से रेखांकित किया गया है। जेसन क्विन का एक अँगरेजी ग्राफिक उपन्यास 2014 में प्रकाशित हुआ था, जिसका हिन्दी–अनुवाद अशोक चक्रधर ने 'गाँधी : मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है' नाम से किया है। इस पुस्तक से हम जान सकते हैं कि गाँधीजी की आज विश्व को इतनी जरूरत क्यों है? 2007 में राजमोहन गाँधी की एक पुस्तक सामने आई थी – 'मोहनदास – ए ट्रू स्टोरी ऑफ ए मैन – हिज पीपल एण्ड एन एम्पायर'। यह पुस्तक गाँधी को एक नई व आधुनिक दृष्टि से देखती है, जिस पर कुछ प्रश्न भी खड़े किए जा सकते हैं। 'आधुनिक भारत की समझ : एक वैकल्पिक दृष्टि' नाम से प्रो. अरुणा सिन्हा की एक पुस्तक 2020 में प्रकाशित हुई थी, जिसमें आज के परिप्रेक्ष्य में गाँधीय आध्यात्मिकता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है। 'हिन्द स्वराज का सत्य'– इस नाम से 2011 में एक पुस्तक मिथिलेश के सम्पादन में प्रकाशित हुई थी, जिसमें गाँधीजी द्वारा की गई आधुनिक सभ्यता के मूल व उसकी अधोसंरचना की मीमांसा को प्रमुख स्थान दिया गया है।

आस्तिक कौन..?

वे लोग जो स्वयं को नास्तिक कहते हैं, वे ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार करते हैं – किन्तु वे भी किसी न किसी आस्था से बँधे अवश्य होते हैं, भले ही वह उनकी नास्तिकता हो। इसी आधार पर गाँधीजी ने उनको समझाया कि हो सकता है कि आप ईश्वर को न मानते हों, लेकिन आप सत्य को जरूर मानते होंगे और यह सत्य ही ईश्वर है। सत्य को कभी खण्डित नहीं किया जा सकता। वे कहते हैं यदि कोई ईश्वर की व्यक्तिगत अनुभूति करता है, तो वह सत्य की ही अनुभूति करता है। सत्य में आस्था ही धर्म है। इस दृष्टि से ईश्वर को न मानने वाले, किन्तु सत्य को मानने वाले भी धार्मिक हैं, आस्तिक हैं। धार्मिक होने का मतलब है समय–असमय, परोक्ष–अपरोक्ष रूप में अपनी आस्था का स्मरण करते रहना। धार्मिक शब्द से अलग एक शब्द और है, जिसे गाँधीजी अधिक महत्त्व देते हैं। वह शब्द है – 'धर्म–प्राण'। धर्म–प्राण वह व्यक्ति है – जो हर पल, हर क्षण, सोते–जागते, उठते–बैठते, चलते–फिरते 'धर्म' को अपने साथ रखता है। इससे व्यक्ति में और उसकी आस्था में कोई अन्तर नहीं रह जाता। दोनों एक प्राण हो जाते हैं। महात्मा गाँधी ऐसे ही धर्म–प्राण मनीषी थे। उन्होंने अपने चिन्तन का आधार ही धार्मिक बनाया और अपने जीवन को धर्मोद्देश्यपरक लोक–जीवन कहा।

ईश्वर के प्रति हमारे विश्वास के डगमगाने का कारण यह है कि हम ईश्वर का हर समय स्मरण नहीं करते। हम तो ईश्वर को केवल संकट के समय याद करते हैं। हमें समझना चाहिए कि हम जितने धर्म–प्राण होंगे, उतने ही कोरोना जैसी महामारी का मुकाबला करने की दृष्टि से सक्षम होंगे।

ईश्वर

ईश्वर की परिभाषा के सम्बन्ध में गाँधीजी स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर की कोई एक परिभाषा नहीं है, अपितु उसकी असंख्य परिभाषाएँ हैं – क्योंकि उसे अभिव्यक्त करना असम्भव है। वह तो वर्णनातीत है तथा सब वस्तुओं में है। इसलिए हमें यह समझ लेना चाहिए कि ईश्वर किसी की भी पहुँच से दूर नहीं है।

असंख्य अभिव्यक्तियों का अस्तित्व स्वीकारते हुए गाँधीजी ने एक छोटी–सी पंक्ति में ईश्वर को अभिव्यक्त किया है – सत्य ही ईश्वर है। गाँधीजी ने कहा कि सत्य शब्द 'सत' से निसृत हुआ है, जिसका अर्थ है 'होना'। किसी भी वस्तु का या उसके अस्तित्व का होना सत्य के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता। उनकी दृष्टि में सत्य ईश्वर का सबसे महत्त्वपूर्ण नाम है। ईश्वर के सम्बन्ध में सार रूप में उन्हें बार–बार यही कहना उपयुक्त लगा कि सत्य ही ईश्वर है। पहले वे ईश्वर को सत्य कहते थे, लेकिन अनीश्वरवादियों के विचार–व्यवधान के कारण कि वे ईश्वर को नहीं मानते, इसलिए वे उसकी किसी अवधारणा को भी स्वीकार नहीं करते – उन्होंने कहा कि सत्य ही ईश्वर है। अनीश्वरवादी ईश्वर को तो नकार सकते हैं, किन्तु सत्य को नहीं नकार सकते।

महात्मा गाँधी के लिए ईश्वरवादी होने का सर्वाधिक प्रबल पक्ष यही था कि वे सत्य की विजय के प्रयास में कहे गए हर शब्द के पीछे एक धर्म–प्राण मनुष्य की तरह ईश्वर पर अवलम्बित रहते थे। इस अवलम्बन से ही वे कुछ करने की प्रेरणा प्राप्त करते थे। चाहे कोई आन्दोलन हो, उपवास हो या अनशन हो – अपने सभी कार्य वे ईश्वर के नाम पर ही करते थे। उनके लिए सत्य की विजय का एक ही मार्ग था और वह था ईश्वर में अडिग विश्वास रखते हुए कर्म–साधना करते जाना। कोरोना महामारी के इस दौर में हम ईश्वर में अडिग विश्वास रखते हुए मानवता की सेवा करेंगे, तभी हम अर्थव्यवस्था के भौतिक दुष्चक्र से बाहर निकल पाएँगे और तभी हमारे मूल्य सुरक्षित रहेंगे।

ईश्वर में अखण्ड विश्वास

महात्मा गाँधी का ईश्वर में अखण्ड विश्वास था। उनके अनुसार हवा–पानी के बिना रहा जा सकता है, लेकिन ईश्वर के बिना नहीं रहा जा सकता। वे कहते थे भले ही मेरे टुकड़े–टुकड़े कर दो, मैं ईश्वर को नकार नहीं सकूँगा।

गाँधीजी का कहना था कि कर्म करना ईश्वर में जीवन्त आस्था का प्रमाण है। यहाँ तक कि अहिंसा भी बिना ईश्वर में विश्वास के निरर्थक है। गाँधीजी ने कहा ईश्वर जीवन है, इसलिए अच्छाई जिन और बातों को अभिव्यक्त करती है – वे मात्र सद्‌गुण नहीं हैं। अच्छाई ही ईश्वर है। गाँधीजी का मत था कि ईश्वर के बिना जिस अच्छाई की कल्पना की जाए, वह एक प्राणहीन वस्तु है और उसका अस्तित्व केवल भौतिक है। वे मानते थे कि हर प्रकार की नैतिकता का अस्तित्व ईश्वर से ही है। हम अच्छा बनने की कोशिश इसलिए करते हैं कि हम ईश्वर को पा सकें।

गाँधीजी ने लिखा था कि सत्य व अहिंसा में हमें आत्मा से रम जाना चाहिए, क्योंकि सत्य व अहिंसा पर किया गया अनात्मिक अथवा यान्त्रिक विश्वास किसी भी क्षण भंग हो सकता है। जीवन्त ईश्वरीय शक्ति ही, जिसका सम्बन्ध हमारे शरीर से नहीं है, हमारे जीवन का संचालन करती है व वही हमारे भीतर बसती है। हमें मानना चाहिए कि ईश्वर ही समस्त जीवन को चलाने वाला नियम है। उसके अस्तित्व को अस्वीकार करना उस अपरिमित शक्ति से स्वयं को वंचित करना व क्रियाहीन नपुंसक बनना है, जिससे यह संसार चलता है। ऐसा करना बिना पतवार के नाव खेते–खेते बिना कोई प्रगति किए नष्ट हो जाना है। गाँधीजी का विश्वास था कि ईश्वर जैसा लोकतान्त्रिक दूसरा नहीं है, क्योंकि उसने हमें अच्छाई व बुराई में से चुनाव करने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया है।

अहिंसा

गाँधीजी के अनुसार जीव मात्र को कष्ट न पहुँचाना अहिंसा है और जीव मात्र को कष्ट पहुँचाना हिंसा है। अहिंसा वस्तुतः हिंसा का अभाव ही है। अहिंसा में यदि ईश्वर पर विश्वास नहीं किया जाएगा, तो हम में वह साहस ही पैदा नहीं होगा – जिसके सहारे हम बिना क्रोध, भय व प्रतिशोध की भावना के अपने प्राणों का उत्सर्ग कर सकें, जो कि अहिंसा–पथ पर चलने की प्रारम्भिक व अनिवार्य शर्त है। हमारा भय तभी दूर होता है, जब हम यह विश्वास कर लेते हैं कि ईश्वर का वास हमारे हृदय में है। गाँधीजी ने कहा था कि ईश्वर की सर्वव्यापकता का ज्ञान हम में दूसरों के प्रति आदर की भावना पैदा करता है, भले ही कोई दूसरा विरोधी हो या गुण्डा! यह आदर की भावना हमें हिंसा करने से रोकती है। अहिंसा का यह उदात्त भाव व्यक्ति से परिवार, परिवार से राज्य, राज्य से राष्ट्र और उससे भी आगे सारी दुनिया तक संचरित होना चाहिए। चीन, जिस पर आक्षेप है कि उसने दुनिया में कोरोना नाम की महामारी फैलाई, को विश्व का सचेतन समुदाय यही कहता है कि उसने दूसरे राष्ट्रों के प्रति आदर की भावना नहीं रखी और अवर्णनीय हिंसा की।

कोई भी राष्ट्र पूर्णतः अहिंसक तभी बन सकता है, जब उसके नागरिक अहिंसक हों। इसी आधार पर विभिन्न राष्ट्रों को आज गाँधीजी के अहिंसा–विज्ञान को सक्रियता से मान्यता देनी चाहिए। यह सक्रियता उनके नागरिकों को ईश्वर में अटूट विश्वास करने के लिए प्रेरित करेगी। किसी भी अहिंसक व्यक्ति के लिए प्रथम व अन्तिम ढाल ईश्वर के प्रति उसकी अडिग आस्था ही है। अहिंसक व्यक्ति स्वयं अपनी शक्ति से कार्य नहीं करता, बल्कि ईश्वर उसे वह शक्ति प्रदान करता है।

सत्याग्रह

सत्याग्रह गाँधीजी की वह तकनीक है, जिसके सहारे वे विरोधी को सप्रेम सहमत करना चाहते हैं। सत्याग्रह का अधिष्ठान सत्य है। सत्य के लिए आग्रह की शर्त अहिंसा है। गाँधीजी ने कहा था कि सत्याग्रही के मन में सत्य की विजय देखने की अधीरता अपने वर्तमान शरीर में नहीं होती। सच्चा सत्याग्रही शरीर को नश्वर मानता है। वह यह भी मानता है कि आत्मा शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी जीवित रहती है। वास्तव में सत्याग्रही की तब भी विजेता होता है, जब वह अपने विरोधी को सत्य के दर्शन कराने के प्रयास में मारा जाता है। यह गुण व्यक्ति में तभी आ सकता है, जब उसका ईश्वर में अडिग विश्वास हो। सत्याग्रही का अस्त्र ईश्वर होता है, भले ही वह उसे किसी भी नाम से पुकारे। बिना ईश्वर के सहारे तो सत्याग्रही अपने विरोधी के प्रचण्ड शस्त्रास्त्रों के

समक्ष एकदम असहाय हो जाता है। वह अपने रक्षक के रूप में ईश्वर को मानकर चलता है, इसीलिए वह किसी सर्वसम्पन्न पार्थिव शक्ति के सामने भी नहीं झुकता। इसके विपरीत यदि मनुष्य अपनी चेष्टाओं से ईश्वर को अलग कर दे या उसे भुला दे, तो उसकी प्रवृत्ति बिगड़ जाती हैं और वह हिंसा पर उतारू हो जाता है।

वर्तमान में विश्व जिस संकट से गुजर रहा है, उसमें मनुष्यों का ईश्वर से पृथक रहकर चलना उन्हें दुर्बल ही करेगा – इसलिए हम सभी को ईश्वर में अटूट विश्वास रखना चाहिए। सत्य के प्रति आग्रह ही, भले ही वह हमारे कितने ही शरीरों तक चले, इस दुनिया को अजैविक व जैविक हथियारों से मुक्ति दिला सकता है।

रहस्यमूलक अनुभूतियाँ

गाँधीजी ने अनेक स्थानों पर अपनी रहस्यमूलक अनुभूतियों का सन्दर्भ दिया है। उदाहरण के लिए वे कहते हैं कि अस्पृश्यता–निवारण के सम्बन्ध में इक्कीस दिवसीय उपवास का निर्देश उन्हें रात के करीब बारह बजे किसी अदृश्य चीज के साथ वार्तालाप से हुआ। इस प्रकार की आध्यात्मिक व रहस्यमूलक अनुभूतियों के कारण उन्हें अनेक बुद्धिजीवियों व राजनेताओं ने गंभीर आलोचना का पात्र भी बनाया और उनके विचारों को अतार्किक व अबौद्धिक घोषित किया गया। कहा गया कि ईश्वर तो अतार्किक व अबौद्धिक होना ही नहीं चाहिए और न ही इस विषय में भावुकता का कोई स्थान होना चाहिए। वास्तविकता यह है कि ईश्वर के सम्बन्ध में गाँधीजी के ही नहीं, किसी के भी आध्यात्मिक या रहस्यमूलक अनुभव बिना भावुकता के हो ही नहीं सकते। ईश्वर बुद्धि का नहीं, मन का विषय है। वह तर्कातीत है। ईश्वर यदि तार्किक है, तो वह उसे मानने वाले की भावुकता के कारण ही है। इस सम्बन्ध में हमें यह देखना चाहिए कि गाँधीजी की अनुभूतियाँ कहीं न कहीं सत्य, प्रेम व अहिंसा के विचार का उल्लंघन करते हुए दिखाई देती हैं या नही.. ? सच्चा भक्त ईश्वर की सेवा में कभी सत्य, प्रेम या अहिंसा के विचार का उल्लंघन कर ही नहीं सकता। भक्ति का अर्थ ही ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण आत्मसमर्पण होता है।

जहाँ सम्पूर्ण आत्मसमर्पण का विषय आ जाता है, वहाँ गढ़े हुए तर्क नहीं देखे जाते। हमारे लिए गाँधीजी की आध्यात्मिक व रहस्यमूलक अनुभूतियों को इसी रूप में देखा जाना उपयुक्त रहेगा। इलाहाबाद से प्रकाशित पत्र 'द लीडर' में 1916 में ही उन्होंने कह दिया था कि जीवन में ऐसे क्षण आते हैं, जब कुछ चीजों के लिए हमें बाह्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। हमारे भीतर से एक हल्की–सी आवाज हमें बताती है कि तुम सही राह पर हो और तुम्हें दाएँ–बाएँ मुड़ने की जरूरत नहीं है..!

गाँधीजी की इन अनुभूतियों से एक समस्या उठ खड़ी होती है कि क्या ऐसी निजी अनुभूतियाँ सार्वजनिक रूप से व्यवहार में लाई जा सकती हैं..? गाँधीजी के अनुभवों से हम सीख सकते हैं कि ऐसा किया जा सकता है, लेकिन इसकी शर्त यह है अन्तःकरण की झूठी आवाज सुनने का दावा किसी को नहीं करना चाहिए। इससे उसके शरीर व उसकी आत्मा, दोनों का विनाश हो जाता है। वे कहते हैं कि मेरे उदार आलोचक मुझे कपटी तो नहीं मानते, लेकिन उनका ख्याल है कि सम्भवतः मैं किसी विभ्रम का शिकार होकर काम करता हूँ..! 1932 में मुम्बई से प्रकाशित एक दैनिक 'बॉम्बे क्रॉनिकल' को उन्होंने बताया कि मेरे विभ्रम में होने का कोई प्रश्न ही नहीं है। मैंने एक सीधा–सादा वैज्ञानिक सत्य प्रस्तुत किया है, जिसे सभी लोग जाँच–परख सकते हैं – बशर्ते उनमें अपेक्षित योग्यता अर्जित करने की इच्छा व धैर्य हो। ईश्वरीय अनुभूति के सम्बन्ध में गाँधीजी का तो यहाँ तक विश्वास था कि मनुष्य के जीवन का उद्देश्य आत्मानुभूति होना चाहिए और आत्मानुभूति का अर्थ है – ईश्वर से साक्षात्कार अर्थात सम्पूर्ण निरपेक्ष सत्य को आत्मसात करना। इस प्रकार मनुष्य की मुक्ति ईश्वर को जानने में है और ईश्वर को जानना ही स्वयं को जानना है।

वर्तमान सन्दर्भ में, जब एक महामारी ने सारे संसार को चपेट में ले रखा है, गाँधीजी की ईश्वर–सम्बन्धी रहस्यमूलक अनुभूतियों की एक ही प्रासंगिकता समझ में आती है कि व्यक्ति के सामने जब कोई मार्ग सुनिश्चित न हो, तो उसे सच्चे मन से स्वयं को ईश्वर के अधीन कर देना चाहिए। यदि यह अधीनता सम्पूर्ण आत्मसमर्पण के भाव से स्वीकार की हुई होगी, तो निश्चित रूप से उसे उसी का बोध होगा – जो करणीय होगा।

आध्यात्मिक एकता

कोरोना महामारी से हुए विनाश को हम देशों की सीमाओं के भीतर आँकेंगे, तो हमारे नतीजे भी देशों की सीमाओं से बँधे होंगे। हम यह सोचेंगे कि चीन, जिसने यह महामारी फैलाई है, सबसे अधिक फायदे में रहा – क्योंकि उसका नुकसान सबसे कम हुआ। इसी बिन्दु पर हम यह मानकर विचार करें कि समस्त विश्व एक परिवार है और चीन के नागरिक भी इसी परिवार के अंग हैं, तो निष्कर्ष यह निकलेगा कि उनका भी उतना ही नुकसान हुआ है, जितना अन्य देशों के नागरिकों का हुआ है। यह बात अलग है कि भौगोलिक व राजनैतिक सीमाओं के बन्धन के चलते वे इसे समझ नहीं पा रहे हैं। उन्हें यह बात कैसे समझ में आए कि वे भी विश्व–नागरिक हैं और दुनिया के दूसरे देशों के नागरिक भी उन्हें मित्र–भाव से कैसे देखें, इसका उपाय गाँधीजी ने आध्यात्मिक एकता बताया है।

गाँधीजी आध्यात्मिक एकता में विश्वास करते थे, इसलिए भौगोलिक व राजनैतिक सीमा से ऊपर उठकर मनुष्य जाति की सेवा को ही अपने जीवन का एकमात्र ध्येय समझते थे। वे कहते थे कि मनुष्य को केवल अपनी ही आध्यात्मिक मुक्ति नहीं खोजनी है, अपितु उसे तो सारी मानव–जाति की आध्यात्मिक मुक्ति खोजनी है। यह खोज आत्मानुभूति अर्थात् ईश्वर से साक्षात्कार से होती है। यह आत्मानुभूति भौगोलिक व राजनैतिक सीमाओं को स्वीकार नहीं करती। गाँधीजी के अनुसार आत्मानुभूति व समाज–सेवा एक ही चीज है। आत्मानुभूति केवल उसी स्थिति में हो सकती है, जब मनुष्य सभी की अधिकतम अच्छाई को प्राप्त करने की कोशिश करे। यही सर्वोदय है और यही दुनिया के लोगों में आध्यात्मिक एकता स्थापित करने का मार्ग है।

सर्वोदय तभी सम्भव है, जब सभी लोगों का ईश्वर से साक्षात्कार हो जाए अर्थात् उन्हें आत्मानुभूति हो जाए। आत्मानुभूति की शर्त है आत्मशुद्धि। आत्मशुद्धि के लिए आवश्यक है नैतिक–अनुशासन। विश्व के जितने अधिक लोगों में नैतिक–अनुशासन होगा, उतनी ही अधिक आध्यात्मिक एकता स्थापित होगी। नैतिक अनुशासन की पाँच प्रतिज्ञाएँ हैं– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह व ब्रह्मचर्य।

साधन व साध्य की पवित्रता

गाँधीजी की पाँच प्रतिज्ञाओं को व्यावहारिक रूप से जीवन में उतारने से हमें यह समझ में आ जाएगा कि किसी भी पवित्र साध्य को प्राप्त करने के लिए अपवित्र साधनों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। गाँधीजी के अनुसार जिस प्रकार ईश्वर पवित्र साध्य है व उसे पाने के लिए आत्मानुभूति जैसे पवित्र साधन की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार सर्वोदय साध्य है और अहिंसा उसे प्राप्त करने का सर्वोत्कृष्ट साधन है।

साध्य व साधन की पवित्रता का दर्शन एक अनूठा वैज्ञानिक दर्शन है। मानव–कल्याण के लिए सत्याग्रह एक बेहतर तकनीक है, जो साध्य व साधन की पवित्रता के दर्शन पर आधारित है। सत्याग्रह ही नहीं, गाँधीजी की जितनी भी वैयक्तिक व सार्वजनिक चेष्टाएँ रही हैं – सभी इसी दर्शन पर आधारित रही हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यही कहना युक्तियुक्त प्रतीत होता है कि कोरोना की भयावह परिस्थिति में लोगों को एक–दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ना चाहिए और इसके लिए उन्हें प्रेरणा लेनी चाहिए गाँधीय दर्शन से। गाँधीजी का स्पष्ट दृष्टिकोण है कि घृणा का प्रतिकार घृणा नहीं है। हम हिंसा का प्रत्युत्तर हिंसा से नहीं दे सकते। यदि आपको यह कठिन या असम्भव लगता है कि घृणा का प्रतिकार प्रेम नहीं हो सकता और हिंसा का प्रत्युत्तर अहिंसा नहीं हो सकता, तो आप सम्पूर्ण आत्मसमर्पण के भाव के साथ स्वयं को ईश्वरार्पित करने का अभ्यास प्रारम्भ कर दें और यह अपेक्षा न करें कि आपको जीते जी सफलता मिल ही जाएगी। सर्वोदय के आदर्श तक पहुँचने के लिए विश्व–नागरिकों में आत्मोत्सर्ग करने की ललक होगी, तभी इस जगत् का त्राण होगा। कहा जा सकता है कि ये बातें किताबी हैं और इनके आधार पर वर्तमान विश्व की समस्याओं का समाधान नहीं होगा, लेकिन हमें ध्यान यह भी रखना होगा कि चीन के शासन ने कोविड–19 फैलाकर विश्व को विनाश के कगार पर धकेलने की जो कोशिश की है, उसके बदले में क्या हर देश के शासन को यही करना चाहिए..? फिर तो जो विनाश बाद में होना है, वह बहुत पहले हो जाएगा। विनाश के इस दौर में अपने जीवन को लोक–कल्याण के पथ पर होम देने वाले मानवता के सेवकों की बातों को ध्यान में नहीं रखा जाएगा, तो बचने की कोई सम्भावना ही शेष नहीं रहेगी।

पुस्तक 'स्मृतिशास्त्रीय विधिमीमांसा' में प्रकाशित एक शोध–आलेख 'धर्म पर आधारित गाँधीय चिन्तन की प्रेरणा के स्रोत हमारे धर्मशास्त्र ही हैं' में गाँधीजी के सम्बन्ध में कहा गया है – 'इतिहास में व्यक्ति बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। ऐसे सैंकड़ों उदाहरण उपलब्ध हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि एक व्यक्ति ने पूरे एक कालखण्ड को प्रभावित किया।' फ्राँसिसी लेखक व नाटककार रोमाँ रोलाँ ने अपनी डायरी में गाँधीजी के विषय में लिखा है – 'महात्मा, जिसने विश्व–सत्ता के साथ अपने को एकाकार कर दिया।'

जब दुनिया इस भयावह समय में भारत की ओर देख रही है, तो हमारे लिए यह अवसर है कि हम महात्मा गाँधी की ओर देखें और उनके जीवन व दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विश्व को आध्यात्मिक नेतृत्त्व प्रदान करें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *'Making of a Hindu Patriot : Background of Gandhiji's Hind Swaraj', J. K. Bajaj and M. D. Sriniwas, Har Ananad Publications Pvt. Ltd., New Delhi, 2021.*
2. *'Mohandas: A True Story of a Man: His People and an Empire', Raj Mohan Gandhi, Penguin India, New Delhi, 2021.*
3. *'आधुनिक भारत की समझ – एक वैकल्पिक दृष्टि', प्रो. अरुणा सिन्हा, पुस्तक भारती, टोरेण्टो (कनाडा), 2020.*
4. *'गाँधी की सुन्दरता', सुशोभित शक्तावत, हिन्द युग्म प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020.*
5. *'गाँधी – मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है' (अँगरेजी), जेसन क्विन, हिन्दी–अनुवाद – अशोक चक्रधर, कैम्पफायर – कल्याणी नवयुग मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2014.*
6. *'धर्म पर आधारित गाँधीय चिन्तन की प्रेरणा के स्रोत हमारे धर्मशास्त्र ही हैं' (शोध–आलेख – सुरेन्द्र डी. सोनी), 'स्मृतिशास्त्रीय विधिमीमांसा', डॉ. सत्यप्रकाश दुबे व डॉ. दिलीप कुमार नाथाणी (सम्पादक), महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध–केन्द्र, जोधपुर, 2011.*
7. *'महात्मा गाँधी के विचार', आर. के. प्रभु व यू. आर. राव (हिन्दी–अनुवाद – भवानी दत्त पण्ड्या), नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1994.*
8. *'महात्मा गाँधी–जीवन और दर्शन', रोमाँ रोलाँ (हिंदी–अनुवाद – प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019.*
9. *'मानवाधिकार के तकाजे', नन्दकिशोर आचार्य, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2003.*
10. *'सत्य के साथ मेरे प्रयोग', मोहनदास करमचन्द गाँधी (हिन्दी–अनुवाद– सूरज प्रकाश), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,*
11. *'सभ्यता का विकल्प–गाँधी–दृष्टि का पुनराविष्कार', नन्दकिशोर आचार्य, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1995.*
12. *'हिन्द स्वराज', महात्मा गाँधी, शिक्षा भारती, दिल्ली, 2010.*
13. *'हिन्द स्वराज का सत्य', मिथिलेश (सम्पादक), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2011.*
14. https://www.mkgandhi.org
15. https://www.gandhiashramsevagram.org
16. https://www.gandhiashramsabarmati.org
17. https://en.wikipedia.org
18. http://www.navajivantrust.org